REFERENCE BY THE CHAIR

Observance of International Women's Day — *Contd.*

MR. CHAIRMAN: Now, Ambika Soni*ji* - not to lay a Paper, but to speak on International Women's Day. Being a senior Member, I thought it should start with you.

श्रीमती अम्बिका सोनी (पंजाब): सर, आज सुबह से ही हम सब लोगों ने अखबार पढ़े हैं। उन अखबारों में बहुत-सी ऐसी महिलाओं की तस्वीरें दिखायी गयी हैं, जिन्होंने अपनी ज़िन्दगी में सब कुछ हासिल किया है और वे उन ऊंचाइयों पर पहुँची हैं, जहां हम सोचते हैं कि हर महिला को पहुंचने का अवसर मिलना चाहिए। लेकिन आज पूछने का सवाल तो यह है कि क्या वे महिलाएं और उनके परिवार, हम सब जो यहां बैठे हैं, हमको किसी तरह से भी मददगार या सहायक समझते हैं? मेरी सोच में तो नहीं, क्योंकि हमने क्या किया है? हम इतने सालों पहले आरक्षण का बिल इस सदन में तो पारित कर चुके, बहुत कठिनाई से पारित किया, लेकिन पारित किया था, परन्तु लोक सभा में आज तक वह एजेंडे पर भी नहीं आता है। तो मैं समझती हूँ कि अगर एजेंडे पर उसे लाने में देर करते हैं, तो कम-से-कम हम इस सदन में और दूसरे सदन में एक रिज़ॉल्यूशन तो पारित करें कि हम सब प्रतिबद्ध हैं कि महिलाओं को आरक्षण मिलना चाहिए।

श्री सभापति: ठीक है।

श्रीमती अम्बिका सोनी: सर, आपने आज बहुत अच्छी बातें कहीं। आपने सब कुछ कह दिया, लेकिन उसे पूरा कौन करेगा, किसकी मदद से किया जाएगा? आज महिलाएं सड़क पर चलने से डरती हैं। महिलाओं के मन में अपने स्वाभिमान को बचाने के लिए खौफ है। आप बताएँ कि वह खौफ दूर कैसे होगा? अगर कानून उसके पीछे मज़बूती से खड़ा नहीं होगा, तो यह नहीं हो सकता। मैं आपके जरिए इस सदन से अनुरोध करती हूँ कि आज के दिन एक प्रस्ताव पारित किया जाए कि हम 33 परसेंट आरक्षण देंगे। ...(**व्यवधान**)...

MR. CHAIRMAN: Now, Shrimati Renuka Chowdhury. Please be brief. I am not looking into parties; I am looking into Members. So, please keep in mind that one minute is for everybody.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY (Andhra Pradesh): Sir, Mahatma Gandhi said that the day a woman can walk unafraid in the middle of night on the streets of India, true independence has been gained. Seventy years later, Sir, we are still struggling for that freedom. The number of crimes against women has only increased, and I support my senior colleague, Ambika Soniji, that if this House so pleases, we can pass an amendment which will bring in the 33 per cent. There doesn't need to be a vote, Sir. If there is a political will, it should be implemented because inexorably, Indian women have gone forward by leaps and bounds. India loses one per cent of her GDP because of non-inclusion of women on level-playing fields in work spaces.

MR. CHAIRMAN: Thank you.

SHRIMATI RENUKA CHOWDHURY: I want to thank you very much, Sir. We say, भारत मां, मातृभूमि, मातृभाषा। The Parliament should learn to respect women. Every woman is their *Janma Bhoomi*. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Thank you. We don't call 'Father Land'; we call 'Mother Land'. Kumari Selja.

KUMARI SELJA (Haryana): Sir, I support the Resolution moved by you, and, Sir, I also second ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Let us maintain some seriousness.

KUMARI SELJA: ...what my senior colleague, Shrimati Ambika Soni, has just suggested that this whole House, cutting across party-lines, all of us, should move a resolution and pass a resolution, supporting the Women's Reservation Bill that it should be passed very early in Lok Sabha. Our leader, Shrimati Sonia Gandhi, has already pledged her support. She has written to the Prime Minister that our Party will support it wholeheartedly.

And, Sir, second point, and I will sit down. The second point is that the Government should move for a Commission, an Equal Opportunities Commission for Women, because women in all walks of life are lagging behind and we need this Commission. I hope the Government will look into it. Thank you very much, Sir. My Greetings on International Women's Day!

MR. CHAIRMAN: Thank you. Shrimati Rajani Patil.

श्रीमती रजनी पाटिल (महाराष्ट्र): सर, इस विषय पर आपने बहुत बार मौका दिया है और मैं इस विषय पर बहुत बार बोली हूँ। आज मैं इस विषय पर सिर्फ दो मिनट में श्री शरद कोकाण जी की एक कविता सुनाना चाहूंगी।

"वह कहता था,
वह सुनती थी,
जारी था एक खेल
कहने-सुनने का।

खेल में थी दो पर्चियां।
एक में लिखा था 'कहो',
एक में लिखा था 'सुनो'।

अब यह नियति थी
या महज़ संयोग?
उसके हाथ लगती रही वही पर्ची
जिस पर लिखा था 'सुनो'।

वह सुनती रही।
उसने सुने आदेश।
उसने सुने उपदेश।
बन्दिशें उसके लिए थीं।

[श्रीमती रजनी पाटिल]

उसके लिए थीं वर्जनाएं।
वह जानती थी,
'कहना-सुनना'
नहीं हैं केवल क्रियाएं।

राजा ने कहा, 'ज़हर पियो'
वह मीरा हो गई।

ऋषि ने कहा, 'पत्थर बनो'
वह अहिल्या हो गई।

प्रभु ने कहा, 'निकल जाओ'
वह सीता हो गई।

चिंता से निकली चीख,
किन्हीं कानों ने सुनी नहीं।
वह सती हो गई।

तीन बार तलाक कहा,
वह परित्यक्ता हो गई।

घुटती रही उसकी फरियाद,
अटके रहे शब्द,
सिले रहे होंठ,
रुन्धा रहा गला।

उसके हाथ कभी नहीं लगी वह पर्ची,
जिस पर लिखा था — 'कहो'।"

सर, इसलिए हम वह 'कहने' का मौका चाहते हैं और वह मौका, जो हमारे पूर्व प्रधान मंत्री स्वर्गीय राजीव गांधी जी ने हमें दिया था, उसकी वजह से जिला परिषद से आज हम यहां तक आए हैं। हम चाहते हैं कि अगर इस पार्टी की यानी भारतीय जनता पार्टी की राष्ट्रीय इच्छाशक्ति है, तो उसे यह करना चाहिए, इसे पारित करना चाहिए।

श्री सभापतिः अगर आपने पार्टी का नाम लेकर इसको राजनीतिक रूप दिया, तो गया मौका। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती रजनी पाटिलः सर, सत्ता में वही पार्टी है। चूंकि वह सत्ताधारी पार्टी है, इसलिए उसकी इच्छाशक्ति होनी चाहिए।

श्री सभापतिः श्रीमती सम्पतिया उइके। आप सभी से मेरा यह अनुरोध है कि अगर आप इसको विवादास्पद बनाएंगे, तो वह वही रहेगा। इतने साल से जैसा है, वैसा ही रह जाएगा। So, let us focus our attention. ...(*Interruptions*)... Please. Please. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती रजनी पाटिलः सर, चूंकि यह राष्ट्रीय इच्छाशक्ति का मसला है, इसलिए मैं राष्ट्रीय इच्छाशक्ति के बारे में बता रही हूँ।

MR. CHAIRMAN: Rajaniji, you are very experienced, educated also. Please try to understand my point. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती रजनी पाटिलः सर, मैं political will की बात कर रही हूँ, धन्यवाद।

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश)ः सर ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः विप्लव जी, विप्लव आएगा या नहीं आएगा, यह मालूम नहीं, लेकिन आपको मौका मिलेगा। श्रीमती सम्पतिया उइके।

श्रीमती सम्पतिया उइके (मध्य प्रदेश)ः माननीय सभापति जी, मैं 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' की शुभकामनाएं देती हूँ और आज आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूँ। जिस तरह से लगातार त्रिस्तरीय पंचायती राज में महिलाओं को, मुझे यह कहने में कोई संकोच नहीं है कि 50 परसेंट आरक्षण मिला है और जिसके चलते पंचायती राज में हमारी बहनें घर, चौके से बाहर आकर आज समाज में काम कर रही हैं, अब जहां पर भी, जिस जगह पर भी बहनों को जो दायित्व दिया जाता है, चाहे वह ग्रामीण क्षेत्र में हो, चाहे शहरी क्षेत्र में हो, हर जगह हमारी बहनें उस दायित्व का निर्वहन करती हैं। लगातार अखबारों में छोटी और नाबालिग बच्चियों के साथ छेड़छाड़ या कुकर्म की घटनाओं की खबरें आती रहती हैं, उन पर कोई एक्शन नहीं होता, लेकिन मुझे यह कहते हुए गर्व हो रहा है कि हमारे मध्य प्रदेश के लाड़ले माननीय मुख्य मंत्री जी ने 7 दिसम्बर को कैबिनेट में इस पर एक प्रस्ताव पारित किया।

MR. CHAIRMAN: Please, please; no politics and no reference to individuals. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती सम्पतिया उइकेः उसमें उन्होंने स्पष्ट कहा है कि कोई भी अगर किसी बेटी के साथ इस प्रकार की घटना को अंजाम देगा, उसे फांसी के फंदे पर लटका दिया जाएगा। ऐसा 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' कार्यक्रम हमारी भारतीय जनता पार्टी की सरकार ने चलाया, जिसके तहत देश की बेटियों को लगातार सम्मान दिया जा रहा है। उसी के चलते, हमारी बहनें आज हर क्षेत्र में आगे आ रही हैं। इसके साथ-साथ आज हम देखते हैं कि प्राइमरी स्कूल के बाद कॉलेजों में लगातार हमारी बेटियां प्रवेश लेकर अपने भविष्य को निखार रही हैं। माननीय प्रधान मंत्री जी को इस अवसर पर मैं बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूंगी कि इतने बड़े विदेश मंत्रालय का भार हमारी बहन श्रीमती सुषमा स्वराज जी को और इतने बड़े रक्षा मंत्रालय का भार हमारी बहन श्रीमती निर्मला सीतारमण जी को देकर उन्होंने हमारी बहनों का सम्मान किया है। इन शब्दों के साथ मैं आपको भी बहुत-बहुत धन्यवाद देती हूं।

श्रीमती छाया वर्मा (छत्तीसगढ़)ः महोदय, समय देने के लिए बहुत-बहुत धन्यवाद। आपके माध्यम से आज मैं 'वुमन्स डे' के उपलक्ष्य में सभी महिलाओं को धन्यवाद देते हुए बताना चाहूंगी कि 'पंचायती राज' के तहत जहां हम बहनों को त्रि-स्तरीय पंचायती राज और नगरीय निकाय में तो आरक्षण मिल गया, लेकिन सरकार की करनी और कथनी में ज़मीन-आसमान का अंतर दिखाई दे रहा है, तभी हमें विधान सभाओं और लोक सभा में अभी तक कोई आरक्षण नहीं मिला। महोदय, मैं विश्व के सबसे गरीब राज्य छत्तीसगढ़ से आती हूं। वहां हर दिन एक महिला के साथ बलात्कार ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः मैं चाहता हूं कि हम लोग मूल विषय पर आएं ...(**व्यवधान**)... और महिला दिवस पर ही यहां चर्चा करें। ...(**व्यवधान**)...

श्रीमती छाया वर्माः वहां 11,000 महिलाएं गायब हैं। वहां का शासन कुछ नहीं कर पा रहा है। दिल्ली में जब निर्भया कांड हुआ तो एक निर्भया कोष बना था। मैं सदन को बताना चाहूंगी कि उस निर्भया कोष का एक भी पैसा पिछले एक साल में खर्च नहीं हुआ है। फिर ऐसा कोष बनाने का क्या औचित्य है? ...(**व्यवधान**)... 'आज नहीं तुम अबला नारी, सुनो मेरी आवाज़ को'।

MR. CHAIRMAN: Please; Shrimati Wansuk Syiem. ...(*Interruptions*)... Please nothing would go on record if unnecessary.. ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI WANSUK SYIEM (Meghalaya): Thank you very much, Sir. On this special day, the International Women's Day, I pay my deep respects to all the women of this world. There is a saying - '*janani janmabhoomishcha swargadapi gariyasi*', which means that a mother is greater than heaven. On this day, I reiterate the demand of 33 per cent reservation for women and to end all the atrocities against women.

श्रीमती विप्लव ठाकुर (हिमाचल प्रदेश)ः सभापति जी, आपने सदन में चर्चा शुरु कराई कि हम महिलाओं को बराबरी का दर्जा मिलना चाहिए। मैं इसी सदन की बात करना चाहती हूं, दूर नहीं जाना चाहती। मैं पूछना चाहती हूं कि हमारे 'Panel of Vice-Chairmen' में क्या कोई महिला है? आज कोई भी महिला इस सदन के 'Panel of Vice-Chairmen' में नहीं है — फिर कहां हम बराबरी की बात करते हैं? आपने कहा कि हमें घर से ही शुरू करना चाहिए, मैं कहना चाहती हूं कि आप यहीं से शुरू कीजिए। ठीक है, एक समय नजमा जी हमारी उपसभापति थीं, लेकिन आज क्या हममें से कोई महिला इस लायक नहीं है कि वह पेनल में शामिल होकर उस कुर्सी पर बैठ सके? फिर बराबरी कहां है? सिर्फ बातें करने के लिए हमारे पास बहुत कुछ है, लेकिन हमारी सोच, हमारा mindset, त्रेता युग की तरफ ही जाता है, जहां अगर कोई महिला अपनी पसंद की बात करती है, तो उसके साथ ऐसा व्यवहार किया जाता है। हमारे पुरुषों का आज वही mindset बन गया है। जब तक हम इसे नहीं बदलेंगे, हम महिलाओं के लिए कुछ नहीं कर पाएंगे, 'महिला दिवस' मात्र एक ढकोसला बनकर रह जाएगा और 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' नारे का कोई मतलब नहीं रहेगा। मैं चाहती हूं कि हमें सदन में महिला आरक्षण बिल लाकर उसे पास कराना चाहिए। बहुत-बहुत धन्यवाद।

श्री सभापतिः आपने जो सुझाव दिया, उसे मैंने स्वीकार किया और तुरन्त उसे कार्यान्वित करने का प्रयास किया जाएगा। Now, Shrimati Kanimozhi.

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN (Tamil Nadu): Sir, I would request my sister to talk about hon. *Amma*. She must mention her. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Please, please. You would get an opportunity to speak. Don't worry. ...(*Interruptions*)... Please. ...(*Interruptions*)... He is making a request to his sister.

SHRI A. NAVANEETHAKRISHNAN: Sir, this is my request to her. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Everybody respects *Amma*, your Amma, our own *Amma*. ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI KANIMOZHI (Tamil Nadu): Sir, I thank you and I thank all the colleagues here for putting aside all the differences today and allowing women here to express their views and to give us space to express our views here. I thank you all for that. Sir, men are celebrating us today as mothers, as sisters, as daughters. I think it is time for women to say enough of that. We don't want to be celebrated for our sacrifices; we don't want to be celebrated for what we give up. We want to be celebrated for what we are; we want to find our identity, our individuality and we want to pursue our dreams and, I think, that is what Women's Day is all about. Sir, we are talking about the greatness of women; we are talking about the achievements of women. But what is the truth? Today, women are leaving the formal workforce. It is only 27 per cent of women in India who are in the formal workforce. Domestic violence against women is increasing. Workplaces are not safer for women anymore. Children are not safe; there are so many missing millions. Female children are still not wanted in this country. Families want to abort and kill a female child. This is still continuing. There are so many dowry deaths. When are we going to put an end to all this? Malnutrition is still prevalent. *Dalit* and *adivasi* women go through so many hardships and face so many insults and humiliation everyday. Taking a look at this, we have to understand the importance of passing the Women's Reservation Bill. Sir, sadly, it is one Bill which nearly every party in this House supports. But we cannot still pass it. It is a shame on all of us. We passed that Bill over here after so much of struggle. Women had to stand there to protect the Minister to read out. You were there to see; it happened. Today, the Government can easily pass it in the Lok Sabha. ...(*Interruptions*)... They have all our support to pass the Bill. I request, through you, that the Government passes the Bill. We are with them. Our party leader, Dr. Kalaignar, has written to the Prime Minister, our Working President has written to the Prime Minister and Mrs. Sonia Gandhi has written to the Prime Minister about this. We request the Government to pass the Bill because we cannot continue passing Bills without women here. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Shrimati Thota Seetharama Lakshmi, if you want to say something you can say it in Telugu also. I am here to translate it. For better English, Renukaji can translate it and if you want Oxford English, Jairam Ramesh is here. ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI THOTA SEETHARAMA LAKSHMI (Andhra Pradesh): *"Hon'ble Chairman Sir, I would like to congratulate all women on the occasion of International Women's Day. Sir, the word "Woman" means Strength, Mother India and Mother

*English translation of the original speech made in Telegu.

[Shrimati Thota Seetharama Lakshmi]

Tongue. If women are respected, that land, be it Country, State or District, will be prosperous. Today, there are many laws but if a woman wants to excel at national or international level, in any field including politics, much more powerful laws have to be enacted. I thank you for giving me this opportunity to speak on the occasion of International Women's Day."

MS ANU AGA (Nominated): I find it strange that when we celebrate Women's Day, men don't celebrate Men's Day because they get the opportunity and one-upmanship throughout the year. I am not for this one day tokenism of allowing women to speak, giving them opportunity. If we look at the female foeticide rate in India, which is on the rise, the safety of women is not there. So, I request all the men, stop throwing crumbs at us, and instead of this tokenism, throughout the year, treat us with respect and offer us opportunities. Thank you.

श्रीमती रूपा गांगुली (नाम-निर्देशित): धन्यवाद सभापति महोदय, जिनकी कोख से हम जन्म लेते हैं, वे महिलाएं हैं, जो पुरुषों की बीवियां हैं, वे महिलाएं हैं, बेटियां महिलाएं हैं। मुझे बचपन से ऐसी फीलिंग होती थी कि हम महिला के नाम पर कोई स्पेशल नहीं हैं क्योंकि हम सबसे पहले इंसान हैं, उसके बाद महिला हैं। "Women's Day' कहकर जो अलग दिन का पालन किया जाता है और उसको इतना महत्व दिया जाता है, वह देखकर मुझे जरूर खुशी होती है। खुशी उनके लिए होती है, जिनको इस देश में इतने साल बाद भी opportunity नहीं मिली। आज हमारे बहुत से माननीय एमपीज़ इस संबंध में बोल रहे हैं, वह सब सुनकर बहुत अच्छा लग रहा है कि हम सब लोग मिलकर यह चाहते हैं कि इस देश की सभी महिलाओं का सशक्तीकरण हो। मैं एक छोटा-सा incident बताना चाहती हूं। जब मैं बचपन में बस में चढ़ती थी तो उसमें जो महिलाओं के लिए reserved seat होती थी, उसे देखकर मैं इस चीज़ पर बहुत गौर करती थी कि जब तक मैं उस बस में हूं, वह सीट अगर खाली है, मैं उस पर बैठी हूं और मेरे सामने कोई बुजुर्ग इंसान खड़ा है तो मैंने उस सीट को उनके लिए छोड़ दिया। उस सीट को छोड़कर किसी बुज़ुर्ग व्यक्ति को request करके जबर्दस्ती उस पर बिठाने के लिए बहुत सारी महिलाओं ने मेरे साथ झगड़ा भी किया कि यह सीट महिला के लिए आरक्षित है। मैंने कहा कि जब तक मैं बस में हूं, यह सीट उस आदमी के लिए है। महोदय, बहुत सिम्पल सी बात है कि हमें अलग करने की जरूरत नहीं है लेकिन women's empowerment ऐसा भी नहीं होना चाहिए कि जिस राज्य में मुख्य मंत्री महिला हो, उसमें सबसे ज्यादा अपराध हों।

MR. CHAIRMAN: Please, no politics. ...(*Interruptions*)... The moment you get into politics, the issue is gone. Though, originally I thought I should confine to women Members, since some male Members... ...(*Interruptions*)... I know. ...(*Interruptions*)...

श्री राजीव शुक्ल (महाराष्ट्र): सुषमा जी को बुलवाइए।

MR. CHAIRMAN: There is a suggestion that male Members also would want to express solidarity. So, I will call one from each party and then Sushmaji also ...(*Interruptions*)... Being senior in the Government ...(*Interruptions*)...

श्रीमती रेणुका चौधरीः सुषमा जी को बोलने दीजिए।

श्री सभापतिः किसको कब बोलने देना है, कृपया यह मुझे बोलने दीजिए। श्री गुलाम नबी आज़ाद।

विपक्ष के नेता (श्री गुलाम नबी आज़ाद)ः सभापति महोदय, सबसे पहले मैं International Women's Day पर हमारे देश की सभी माताओं, बहनों और बहू-बेटियों को बधाई देना चाहता हूं। मुझे पूरा विश्वास है कि सरकार और विपक्ष मिलकर इस देश में एक ऐसा वातावरण बनाएंगे जहां हमारी बहू-बेटियां सुरक्षित और शिक्षित हों। महोदय, पैदा होने से लेकर जब तक वे ज़िदा हैं, महिलाओं को अलग-अलग मुश्किलात् का सामना करना पड़ता है। विश्व में सबसे ज्यादा anaemic गर्भवती महिलाएं अगर कहीं हैं तो दुर्भाग्य से हमारे देश में हैं, सबसे अधिक छोटी बच्चियां अगर कहीं anaemic हैं तो वे हमारे देश में हैं। अगर बच्ची anaemic हो, अगर गर्भवती महिला anaemic बच्चे को जन्म दे, तो शुरुआत वहां से होती है और उसके पैदा होने से लेकर आखिर तक वह समस्या रहती है। उसके बाद political, economic और social problems से अलग से हमारे देश की महिलाओं को गुज़रना पड़ता है। मैं यहां पर सिर्फ दो सुझाव देना चाहता हूं। हमारे देश में महिलाएं सुरक्षित नहीं हैं। मैंने पहले भी, जब माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर चर्चा हो रही थी, उस वक्त भी बताया था कि कानून तो बने और पहले बलात्कार एक उम्र की, एक खासी उम्र की लड़की या औरत के साथ होता था, उसको रोकने में तो हम असफल हुए ही हैं, लेकिन अब तीन-तीन महीने, चार-चार महीने और छः-छः महीने की बच्चियों के साथ बलात्कार हो रहे हैं, ऐसा शायद विश्व में कहीं नहीं हो रहा है। यह पूरे देश के लिए शर्म की बात है और हमें शर्म से डूब मरना चाहिए कि आज देश में ऐसा वातावरण है कि तीन महीने, चार महीने और छः महीने की बच्चियों के साथ बलात्कार हो रहे हैं। हम क्या इंसाफ दे सकते हैं, हम क्या political इंसाफ दे सकते हैं कि जब हम उन्हें उस उम्र में सुरक्षा प्रदान नहीं कर सकते हैं, तो उसके लिए हम सभी को सख्त होना पड़ेगा।

दूसरा, reservation की बड़े अरसे से मांग है। इस सदन में महिलाओं के लिए विधान सभाओं और पार्लियामेंट में reservation का कानून पास हुआ है। यह सबको मालूम है कि वह किस सरकार में और कब हुआ, मैं उसको दोहराना नहीं चाहता हूं। Reservation बाकी local bodies में हुआ, जिला परिषद् में हुआ, लेकिन जहां देश के लिए कानून बनते हैं और जो उन कानूनों को बनाने वाली bodies हैं — विधान सभाएं और लोक सभा, यहां reservation होना चाहिए, आज मेरी यही मांग है।

†**قائد حزب اختلاف (جناب غلام نبی ازاد)** : سبھاپتی مہودے، سب سے پہلے میں International Women's Day پر ہمارے دیش کی سبھی ماتاؤں، بہنوں اور بہو-بیٹیوں کو بدھائی دینا چاہتا ہوں۔ مجھے پورا وشواس ہے کہ سرکار اور وپکش مل کر اس دیش میں ایک ایسا ماحول بنائیں گے جہاں ہماری بہو-بیٹیاں سرکشت اور شکشت ہوں۔

مہودے، پیدا ہونے سے لے کر جب تک وہ زندہ ہیں، مہیلاؤں کو الگ الگ

† Transliteration in Urdu script.

[श्री गुलाम नबी आज़ाद]

مشکلات کا سامنا کرنا پڑتا ہے۔ دنیا میں سب سے زیادہ anaemic حاملہ عورتیں اگر کہیں ہیں تو بدقسمتی سے ہمارے دیش میں ہیں، سب سے زیادہ چھوٹی بچیاں اگر کہیں anaemic ہیں تو وہ ہمارے دیش میں ہیں۔ اگر بچی anaemic ہو، اگر حاملہ عورت anaemic بچے کو جنم دے، تو شروعات وہاں سے ہوتی ہے اور اس کو پیدا ہونے سے لے کر آخر تک وہ سمسیا رہتی ہے۔ اس کے بعد پولیٹکل، اکانومک اور سوشل پرابلمس سے الگ دیش کی مہیلاؤں کو گزرنا پڑتا ہے۔

میں یہاں پر صرف دو سجھاؤ دینا چاہتا ہوں۔ ہمارے دیش میں مہیلانیں سرکشت نہیں ہیں۔ میں نے پہلے بھی، جب مانّنے راشٹرپتی جی کے ابھیبھاشن پر چرچا ہو رہی تھی، اس وقت بھی بتایا تھا کہ قانون تو بنے اور پہلے بلاتکار ایک عمر کی، ایک خاصی عمر کی لڑکی یا عورت کے ساتھہ ہوتا تھا، اس کو روکنے میں تو ہم ناکام ہوئے ہی ہیں، لیکن اب تین تین مہینے، چار چار مہینے اور چھہ چھہ مہینے کی بچیوں کے ساتھہ بلاتکار ہو رہے ہیں، ایسا شاید دنیا میں کہیں نہیں ہو رہا ہے۔ یہ پورے دیش کے لئے شرم کی بات ہے اور ہمیں شرم سے ڈوب مرنا چاہئے کہ آج دیش میں ایک ایسا ماحول ہے کہ تین مہینے، چار مہینے اور چھہ مہینے کی بچیوں کے ساتھہ بلاتکار ہو رہے ہیں۔ ہم کیا انصاف دے سکتے ہیں، ہم کیا پولیٹکل انصاف دے سکتے ہیں کہ جب ہم انہیں اس عمر میں سرکشا فراہم نہیں کر سکتے ہیں، تو اس کے لئے ہم سبھی کو سخت ہونا پڑے گا۔

دوسرا، رزرویشن کی بڑے عرصے سے مانگ ہے۔ اس سدن میں مہیلاؤں کے لئے ودھان سبھاؤں اور پارلیمنٹ میں رزرویشن کا قانون پاس ہوا ہے۔ یہ سب کو معلوم ہے کہ وہ کس سرکار میں اور کب ہوا، میں اس کو دوہرانا نہیں چاہتا ہوں۔ رزرویشن باقی لوکل باڈیز میں ہوا، ضلع پریشد میں ہوا، لیکن جہاں دیش کے لئے قانون بنتے ہیں اور جو ان قانونوں کو بنانے والی بوڈیز ہیں – ودھان سبھا اور لوک سبھا، یہاں رزرویشن ہونا چاہئے، آج میری یہی مانگ ہے۔

SHRI DEREK O'BRIEN (West Bengal): Sir, I did give my name to speak because I think men need to speak more on women's issues than even women, and I completely agree with what Anu Agaji said - this cannot be just one day.

I have two practical suggestions to offer which go beyond the speech. Sir, my party, the All-India Trinamool Congress, without any Women's Reservation Bill, already has 34 per cent of women MPs. We can wait for the Bill. Yes, we all want the Bill, but this is a very practical suggestion where Mamatadi has shown the way.

Number two, I will give another practical suggestion. Forty-seven lakh girls have already benefited. There are so many other good federal programmes which are running. In Bengal, we have the Kanyashree Scheme which has benefited 47 lakh girls. It is a tried and tested programme. In this atmosphere of federal programmes, I suggest we implement this programme nationally.

The last thing I am saying today: good wishes and good luck. Best wishes to not only the women but to men to treat women better because there is an old saying, 'behind every successful man, there is a woman'. But today, it has changed, 'behind every successful man, there is a nationalised bank!' Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Well, this is where the problem comes.

SHRI DEREK O'BRIEN: I didn't say anything, Sir.

MR. CHAIRMAN: It may appear to be good. You are not doing justice to women then. विषय गया तो मामला दूसरी ओर चला जाता है। Now, Shri D. Raja.

SHRI D. RAJA (Tamil Nadu): Sir, on behalf of my party, the Communist Party of India, I take this opportunity to greet women of our country and women of the whole world.

Sir, we all should strive for empowerment of women in every sense, in every respect. Renukaji took the name of Gandhiji. You have taken the name of Ambedkarji. I must take the name of Periyar; I must take the name of Lenin, who all stood for the empowerment of women. When I say 'empowerment', it is political empowerment, economic empowerment, educational empowerment, social empowerment, cultural empowerment, empowerment of women, for which, I think, to begin with, as Parliament, as the highest forum in our democracy, supreme forum in our democracy, we must stand by our commitment to provide reservation to women, and the Parliament should see that the Women's Reservation Bill is passed as early as possible.

DR. V. MAITREYAN (Tamil Nadu): Sir, as a representative of one of the strongest women leaders of the contemporary India, *Puratchi Thalaivi Amma*, I extend my warm wishes to my sisters, both inside the House as well as outside the House throughout the length and breadth of the country. I have only three demands. One, pass the Women's Reservation Bill at the earliest. Two, when the vacancy arises in July, please elect a woman Deputy Chairman for this House. And third, this country has the ancient tradition of treating even the rivers as mother. So, my request to the Government is please create mother Kaveri Board immediately. Thank you.

MR. CHAIRMAN: Thank you. Now, Shri Rangarajan. Please don't get into political things. Otherwise, the purpose will be lost.

SHRI T. K. RANGARAJAN (Tamil Nadu): Thank you, Mr. Chairman. I also agree with the hon. Member, Anu Aga ji, that it should not be a token day. Sir, I would like to draw the attention of the House that there is a small improvement in these 60-70 years, a very small improvement, .001 per cent. But, at the same time, women harassment at workplace is still there and deteriorating. Women are safe when they walk on the street. We have a law, but law enforcement is very weak. The courts are not giving justice to women's cases. Sir, I would like to draw your attention to the fact that the *dalits* and *adivasis* were more affected by the neo liberal policy. That has to be taken into account. For women empowerment, I agree with Mr. Raja that what is written and spoken by Thanthai Periyar must be translated into all languages in India so that people understand how Periyar has worked for women empowerment. Sir, finally, we must use the visual media, we must use the print media for women empowerment, at least, for five minutes or ten minutes every day. Thank you.

श्री सतीश चंद्र मिश्रा (उत्तर प्रदेश): धन्यवाद, सभापति जी। सर, आज International Women's Day पर महिलाओं को बधाई देने की बात है, लेकिन उन्हें सही मायने में बधाई उस दिन मिलेगी, जबकि इस देश के male members यह resolution करें कि जिन की वजह से हम इस धरती पर हैं, जिस महिला ने हमें जन्म दिया है, उनका सम्मान, उनकी इज्जत व उनकी सुरक्षा हम रोजाना उन्हें मुहैया कराएं। यह नहीं कि सिर्फ एक दिन इस बारे में सोचें और उनकी बात करें। अभी जैसा कि हमारी एक सम्मानित महिला सदस्य ने कहा कि हम 365 दिन इस बात को याद रखें और इस हाउस के माध्यम से इस देश के पुरुषों को इस बात का संदेश दें कि हम रोजाना इन बातों का ध्यान रखें। खास तौर से यह ध्यान रखें कि कहीं ऐसा न हो कि इस तरह के लोगों को सही रास्ता दिखाने के लिए उनको काली मां और दुर्गा मां का रूप अपनाना पड़े।

सर, इस के साथ-साथ मैंने शुरू में भी कहा और शायद आपने उसे accept भी कर लिया है कि वाइस चेयरमैन के panel में एक महिला जरूर हो। अगर आज के दिन उन्हें पीठ पर बिठा दें तो बहुत ही अच्छा होगा।

SHRI MAJEED MEMON (Maharashtra): Thank you, hon. Chairman, for giving this opportunity to me to speak about our womenfolk in the country. First, my compliments and hearty congratulations to all the female Members in this House and through these words of mine, the same extension to all the women of my country. I must say that when we talk of human rights, we don't talk of different human rights for males and different human rights for females. They are identical, absolutely identical. They are considered as human beings. I am afraid whether 600 million females in my country are receiving equal treatment even when we assess the execution of our commitment to human rights. Now, I must tell you, hon. Chairman, that we, as law-makers here, have a great responsibility to ensure equal treatment when the Constitution mandates that we should not discriminate any

Indian citizen on the ground of sex. On the ground of sex, we can't discriminate any Indian citizen. So, I would send my compliments. I must take only a minute more by reminding this House that as far as my party is concerned, we created a world record by appointing the youngest female Minister, Ms. Agatha Sangma, in the UPA. She was the youngest woman Minister in any State, at any time in the history of the world. So, this was indeed a big salute to women's honour. I think the same thing should follow.

DR. SUBRAMANIAN SWAMY (Nominated): I don't know why they are protesting. Everybody knows that I am very pro-woman. Mr. Chairman, I am making two short points.

First of all, this country's tradition is not to discriminate against women or ill-treat them. We have been to war twice in our history. First time because of Draupadi and second time because of Sita. This is the tradition that we have. This tradition also continued ...(*Interruptions*)... The second point which I am making ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: No comments. ...(*Interruptions*)... No comments. ...(*Interruptions*)... You can disagree afterwards.

DR. SUBRAMANIAN SWAMY: You can see our tradition even on women empowerment. If you look at Brahma's Cabinet, all the important portfolios are with women. Finance is with Lakshmi. Defence is with Durga. Education is with Saraswati. And the only portfolio for the man, who is Narad Muni, is Information and Broadcasting. This is our tradition. I am only saying ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Please, please. ...(*Interruptions*)...

DR. SUBRAMANIAN SWAMY: I am only saying that we should concentrate on their empowerment. I am shocked to learn that for the last 70 years, of which for 54 years they were in power, so I think they will not disagree...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Let us come to the issue.

DR. SUBRAMANIAN SWAMY: There has not been a single woman Cabinet Secretary. So if you are going to have a Deputy Chairman who is a woman, I would say you should have a Cabinet Secretary also who is a woman.

SHRI V. VIJAYASAI REDDY (Andhra Pradesh): Sir, I would like to bring four points to your kind notice.

First point is on women's reservation. According to us, it should be in proportion to their population. Since women's population is almost 49-50 per cent, the reservation for them should be fifty per cent and wherever they are underrepresented,

[Shri V. Vijayasai Reddy]

particularly military, judiciary and in some other establishments wherever there is underrepresentation of women, that should be taken care of.

Second point is on dowry system. Why is dowry system in existence? *In lieu* of the right in property, dowry is being given, though it is prohibited by law. I request the Government of India to consider and amend the Hindu Succession Act and also other relevant immoveable property Acts conferring the right over property to the women.

Third point is on female foeticide which is done in the first few months of pregnancy itself. They are forced to undergo sex determination test to determine if it is a female child, and then they resort to abortion. That is also prohibited but still it is going on. A firm action needs to be taken.

Thank you very much, Sir.

SHRI K.T.S. TULSI (Nominated): Sir, my mother Mrs. Baljeet Tulsi was a feminist. She was a student of Kinnaird College in Lahore. At the age of about 17, she wrote this poem when she was prevented from going to Kavi Darbar. I would just like to recite this poem. Who says woman is the property of man?

कौन केन्दा है कि नारी पुरुष दी है जायदाद,
पांडवां ने जुए हारी, बोली नहीं ऐह कुज्ज बेचारी,
इस लई ही ऐह जायदाद?

कौन केन्दा है इसनू जुत्ती पुरुषां दे पैर दी,
शिकार क्योंकि हो गई ऐह मनु जी दे वैर दी,

कौन केन्दा है, इसनू ताड़ना ही ठीक है,
क्योंकि तुलसीदास दा कहना पत्थर ते लकीर है,

कौन केन्दा है, इस उत्ते कदे न ऐतबार है,
पुछांगा मैं वारिस शाह नूं
तैनू कहण दा की अधिकार है?

In this poem, she challenges the male supremacy. And I think it is as relevant today as it was in 1936.

SHRI TIRUCHI SIVA (Tamil Nadu): Sir, we are just confining ourselves to extending wishes to the women community on the International Women's Day. We have to do something concrete and constructive. One thing everyone suggested is the passage of the Women's Reservation Bill. That lies within the powers of Parliament

and involves all the political parties. But I would urge the Government, as a right gesture of celebrating the International Women's Day, to exempt the sanitary napkins from the GST net for many poor and rural women are not able to afford that and because of that they are undergoing a lot of health problems. So, on this International Women's Day, if the Government announces that, it will be a great message to the women community. Thank you, Sir.

MR. CHAIRMAN: Mr. Siva, that is a good suggestion.

श्री दिलीप कुमार तिर्की (ओडिशा): सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद। मैं आज इंटरनेशनल वुमेन्स डे पर देश की सभी महिलाओं को मुबारकबाद देना चाहता हूं, शुभकामना देना चाहता हूं। हमारे देश में महिलाओं का स्थान हमेशा से ऊपर रहा है। चाहे आज़ादी के बाद की स्थिति हो या अब तक की स्थिति हो, देश के लिए महिलाओं का काफी योगदान रहा है। वह चाहे politics, प्रशासन, समाज सेवा, एविएशन या स्पोर्ट्स का क्षेत्र हो, मुझे ऐसा लग रहा है कि हरेक क्षेत्र में हमारी महिलाएं पुरुषों से आगे निकल रही हैं। आज हमारी महिलाएं जेट फाइटर प्लेन चलाने जा रही हैं। पूरे वर्ल्ड में कमर्शियल पायलट के रूप में हमारे देश की महिलाएं 12 परसेंट... 5 परसेंट के रेश्यो पर सबसे ज्यादा हैं।

महोदय, हमारे ओडिशा प्रांत से छह लड़कियां ओलंपिक गेम्स खेलने गई थीं। ओलंपिक गेम्स में देश को जो मेडल्स मिले थे, दो लड़कियों ने ही देश को मेडल्स दिलवाए थे और हमारी शान बढ़ाई थी। महोदय, देश का जो एक नारा है, "बेटी बचाओ-बेटी पढ़ाओ", मैं इस नारे के साथ, "बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ, साथ-साथ बेटी खिलाओ" जोड़ना चाहूंगा।

महोदय, मैं एक और बात आपके ध्यान में लाना चाहूंगा हक हमारे मुख्य मंत्री श्री नवीन पटनायक ने वुमेन्स एम्पावरमेंट के लिए पंचायत लेवल पर 50 परसेंट रिज़र्वेशन दिया है। आपने मुझे बोलने का अवसर दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।

SHRI DHARMAPURI SRINIVAS (Telangana): Sir, on this great occasion, I congratulate and pay my compliments to the women Members and to all the women in the country. But, mere compliments and congratulations would not work. I think we will have to go all-out to empower the women. There is a saying that every successful man has a woman behind. I think we will have to work out in such a way and be liberal so that there is a man behind every successful woman. So, it should be on equal terms and as far as achieving this is concerned, the pending Women's Reservation Bill has to be passed. It should be taken up in all genuineness and all seriousness, and freedom should be given to women. As it is, they are going at good speed. It is better that men realise it and support the women to come up and they should also play a very big role in this great democracy. Thank you.

श्री संजय सिंह (राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली): सभापति महोदय, आपका बहुत-बहुत धन्यवाद कि आपने मुझे इस महत्वपूर्ण विषय पर अपनी बात कहने का अवसर दिया है। महोदय, मैं अपनी बात इस बात से शुरू करना चाहता हूं कि प्रधान मंत्री जी ने लाल किले के प्राचीर से कहा था,

[श्री संजय सिंह]

"बेटों को रात को घर से जाने देते हो, बेटियों को रोकते हो।" महोदय, इसके पीछे प्रधान मंत्री जी की बात का मतलब यह था कि बेटियों के प्रति मानसिकता बदलने की आवश्यकता है। मुझे लगता है कि आज बेटियों के प्रति हमारी मानसिकता जैसी सौ साल पहले थी, वही आज भी है। पुरुष समाज तय करता है हक बेटियां क्या पहनेंगी, क्या खाएंगी, कैसे चलेंगी, कैसे रहेंगी। अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस पर हम सभी लोगों को, सरकार को संकल्प लेना चाहिए कि कम से कम इस देश के अंदर ये पाबंदियां बंद होनी चाहिए और Valentine's Day पर बच्चे, बच्चियों को पीटने वाली मानसिकता बदलनी चाहिए। ...(**व्यवधान**)... इस देश के अंदर मानसिकता इस बात के प्रति भी बदलनी चाहिए कि एंटी रोमियो के नाम पर भाई-बहिन को पकड़कर पीट दिया जाए। इस बात की भी मानसिकता बदलनी चाहिए।

मान्यवर, आज मैंने अखबार में देखा कि बरेली के अंदर ...(**व्यवधान**)... जिसका बलात्कार हुआ था, बलात्कार की पीड़ित वह महिला ...(**व्यवधान**)... बलात्कार की पीड़ित उस महिला को एक महीने तक न्याय नहीं मिला ...(**व्यवधान**)... उसने फांसी लगा ली। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः हरिवंश जी बोलिए। ...(**व्यवधान**)... पोलिटिक्स करने से विषय वही रहेगा।

श्री संजय सिंहः बचाने की जरूरत है। ...(**व्यवधान**)...

श्री सभापतिः संजय सिंह जी, Nothing will go on record. ...(*Interruptions*)...

श्री संजय सिंहः *

श्री सभापतिः इस मानसिकता को बदलने की जरूरत है और सभी लोगों को विषय पर फोकस करना चाहिए।

श्री हरिवंश (बिहार)ः सभापति जी, सबसे पहले मैं आपको बधाई देना चाहूंगा, आपने देखा हक इतने दिनों से सदन में जो गतिरोध चल रहा था, वह आज जब महिलाओं का यह मुद्दा आया, तो हम सब लोग शांति-पूर्वक बातचीत कर रहे हैं। समाज में हम लोग महिलाओं का आदर करें, इससे अच्छी और कोई बात नहीं हो सकती। जनता दल यूनाइटेड की ओर से 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' पर देश, दुनिया की सभी महिलाओं को बधाई।

महोदय, मैं एक-एक पंक्ति में पांच सुझाव आपके सामने रखना चाहूंगा। विधायिका में हम महिलाओं को आरक्षण दें। बिहार पहला राज्य था, जिसने 2005 में लोकल बॉडीज, पंचायत से लेकर जिला-परिषद् तक 50 फीसदी आरक्षण दिया, जो पूरे देश में लागू होना चाहिए। बिहार में हमने जैसे नौकरियों में महिलाओं के लिए 35 परसेंट जगह आरक्षित कर रखी है, इसी तरह यह पूरे देश में लागू होना चाहिए। गरीबी रेखा से नीचे बच्चियों को साइकिल देने की योजना जो 2007 में शुरू हुई, यह योजना पूरे देश में लागू होनी चाहिए। माननीय नेता प्रतिपक्ष की इस बात से मैं सहमत हूँ, उन्होंने यह बात पहले भी उठाई थी कि आज हम कहां पहुंच गए हैं कि दो, चार, छह महीने की बच्चियों के साथ बलात्कार हो रहा है, इसके लिए हमें सख्त कानून बनाना चाहिए। अंत में, महिलाओं की मांग पर ही बिहार में शराबबंदी हुई, जो एक साहसिक काम हुआ है, इसको पूरा देश अपनाए, क्योंकि पूरे देश में महिलाओं की मांग उठ रही है कि

---

* Not recorded.

शराबबंदी हो, ताकि उन पर होने वाले domestic violence और दूसरी ऐसी चीजों से उन्हें मुक्ति मिले, धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Right! Many Members were speaking about the Bill. ...(*Interruptions*)... Please. My experience shows that mere Bill will not suffice. Bill followed by will and then have the skill and then go for the kill of the evil. That is the only way. ...(*Interruptions*)... Now, Shrimati Sushma Swaraj.

विदेश मंत्री (श्रीमती सुषमा स्वराज): माननीय सभापति जी, सबसे पहले तो 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' के इस मौके पर मैं अपनी ओर से विश्व की सभी महिलाओं को हार्दिक बधाई और शुभकामनाएं देती हूँ। इसके साथ ही मैं सदन के सभी लोगों के प्रति आभार व्यक्त करती हूँ कि इस विषय पर सदन चल गया और केवल चला ही नहीं, हमारे साथी पुरुष सांसदों ने केवल हमारी बात सुनी ही नहीं, बल्कि हमारे स्वर में स्वर मिलाकर हमारा साथ दिया। सभापति जी, इससे आपका मानसिक तनाव कम हुआ, इसलिए आपकी तरफ से भी मैं यहां बैठे अपने सभी साथी सांसदों के प्रति आभार प्रकट करती हूँ।

सभापति जी, 'अंतराष्ट्रीय महिला दिवस' का दिन हमें एक ऐसा मौका देता है, जब हमें महिलाओं द्वारा अर्जित की गई उपलब्धियों की सराहना करनी चाहिए और जो कमियां हैं, उन्हें पूरा करने का संकल्प लेना चाहिए। जहां तक महिला आरक्षण बिल का सवाल है, मैं शुरू से ही इस बिल की समर्थक रही हूँ और आज भी पुरजोर ढंग से इसकी समर्थक हूँ। मैं आज यहां खड़ी होकर कुछ उन उपलब्धियों का भी बखान करना चाहूंगी, जो उपलब्धियां आरक्षण के बिना भी महिलाओं ने प्राप्त की हैं। जब एक विदेश मंत्री के नाते मुझे दूसरे देशों में जाने का मौका मिलता है, तो जेंडर एंपावरमेंट एक आम विषय है, जिस पर चर्चा होती ही है। उस समय मैं माथा ऊंचा करके कहती हूँ कि भारत एक ऐसा देश है, जहां महिला राष्ट्रपति बनी, जहां महिला प्रधान मंत्री बनी, जहां दो-दो महिलाएं स्पीकर बनीं, जहां अनेक प्रदेशों की मुख्य मंत्री महिलाएं बनीं, जहां अनेक राष्ट्रीय दलों की अध्यक्षा महिलाएं बनीं। उसी के साथ-साथ मुझे वे उपलब्धियां भी याद आती हैं, जहां महिलाओं ने पुरुषों का एकाधिकार का क्षेत्र तोड़ा है। एक वह समय था, जब पुलिस, आर्मी, एयर फोर्स, कॉमर्शियल पायलेट, जिसकी बात तिर्की जी कर रहे थे, ये सब क्षेत्र पुरुषों के एकाधिकार के थे, लेकिन आज महिलाएं आर्मी में combat duty कर रही हैं, एयर फोर्स के जहाज उड़ा रही हैं, अंतरिक्ष में जा रही हैं, कृत्रिम फुट से, artificial पैर से एवरेस्ट को फतह कर रही हैं। अभी 26 जनवरी को आपने देखा, बाइक्स पर जो करतब होते थे, उन पर पुरुषों का एकाधिकार था, लेकिन इस बार बीएसएफ की 161 जांबाज महिलाओं ने राजपथ पर वह करतब दिखाकर वह एकाधिकार भी तोड़ दिया, लेकिन मैं यह मानती हूँ कि एक तरफ इन उपलब्धियों का आंकड़ा हमारा माथा ऊंचा करता है, वहीं दूसरी ओर महिलाओं के साथ हो रहा अन्याय और उसमें से उपजी हुई उनकी पीड़ा हमारा माथा शर्म से नीचा भी करती हैं। इसीलिए आज का यह दिन संकल्प लेने का दिन है कि इस अन्याय और पीड़ा को हम सहन नहीं करेंगे। जब मैं यह "हम" कहती हूँ, तो मैं men और women, दोनों की बात करती हूं। जब मैं "हम" कहती हूँ, तो मैं पूरे समाज की बात करती हूँ। जब मैं 'हम' कहती हूँ, तो मैं केंद्र सरकार और राज्य सरकारों की बात करती हूँ। इसलिए आज का दिन यह संकल्प लेने का दिन है कि केंद्र सरकार, सभी राज्य सरकारें, सभी सांसद, सभी विधायक और समाज का हर वर्ग, जिस मानसिकता

[श्रीमती सुषमा स्वराज]

की बात मेरे भाई कर रहे थे, उस मानसिकता को तोड़ने में लगेंगे और महिलाओं के साथ जिस तरह का अन्याय हो रहा है और जिस तरह की पीड़ा हो रही है, उसको हम कतई सहन नहीं करेंगे। यह एक movement बनना चाहिए, एक आन्दोलन बनना चाहिए। यह केवल एक सरकारी कार्यक्रम बन कर नहीं रह जाना चाहिए। यदि उस जन-आन्दोलन की भूमिका आज इस सदन से शुरू होती है, तो मुझे लगता है कि हम यह 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' वास्तव में सार्थक रूप से मना पाएँगे। बहुत-बहुत धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: Now, Shri Vijay Goel, the Minister of State for Parliamentary Affairs to convey the feelings of the House to all the concerned.

संसदीय कार्य मंत्रालय में राज्य मंत्री; तथा सांख्यिकी और कार्यक्रम कार्यान्वयन मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री विजय गोयल): सभापति जी, सदन में सभी लोगों ने 'अंतराष्ट्रीय महिला दिवस' पर बधाई दी है। इस अवसर पर मैं इसके लिए भी बधाई देना चाहता हूँ कि कम से कम 'अंतराष्ट्रीय महिला दिवस' पर सदन सुचारु रूप से चल रहा है। बचपन में हम पढ़ते थे — "नारी जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी, आँचल में है दूध और आंखों में पानी", पर मैं समझता हूँ कि देश अब काफी आगे निकल गया है। जो बातें हम यहां कह रहे हैं, उनको अमल में लाने की जरूरत है। जैसा कहा गया कि एक दिन 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' मनाने से क्या होगा, तो ऐसे ही हमने देखा है कि 'हिन्दी दिवस' और बहुत सारे ऐसे दिवस हैं, जिनके लिए हमें लगता है कि एक दिन में क्या होगा, पर जिन चीजों के लिए कुछ ज्यादा करने की जरूरत है, उन्हीं के लिए ये दिवस बनाए गए हैं। मुझे ध्यान आता है कि मेरी मां पूरे घर का काम करती थीं। वे चौका, कपड़े, बर्तन, सफाई, सब कुछ करती थीं। मेरी पत्नी आज दिल्ली यूनिवर्सिटी में प्रोफेसर है और मेरी बेटी उससे आगे जाकर MNC में काम कर रही है। ऐसा नहीं है कि महिलाओं की स्थिति में परिवर्तन नहीं आया है, पर जैसा आदरणीय सुषमा जी ने कहा, यह परिवर्तन पूरे देश में वहां तक पहुँचना चाहिए, जहां पर अभी महिलाओं को पूरा अधिकार और सम्मान नहीं मिल रहा है। स्वयं प्रधान मंत्री आज राजस्थान के अन्दर झुंझुनू में 'बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओ' अभियान को लेकर गए हुए हैं। पहले यह योजना 161 districts में चल रही थी, आज यह 646 districts में जा रही है। मैं पूरे सदन को बधाई देना चाहता हूँ कि वह 'अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस' पर इस बात की चिंता कर रहा है कि महिलाओं को और ज्यादा सम्मान तथा और ज्यादा अधिकार मिलें। धन्यवाद।

MR. CHAIRMAN: As I suggested, once again I repeat and I hope that the Minister of State for Parliamentary Affairs will convey the sentiments and feelings expressed by the hon. Members from all the sides. Though the Rajya Sabha has done its responsibility of passing the Bill — under what circumstances we all know it also, but still it has been passed here — now the matter rests with the other House and we can't make any comment. In fact, I wanted to say something, but after hearing the Minister for External Affairs where she has summed up the present situation in the country and reminded that all of us should join together to see to it that the unfinished agenda of empowerment of women in all walks of life are taken care

of by the Government and by the political parties, I hope initiatives will be taken from the Government side to take this forward and see to it that the aspirations of the people of India, particularly, women are fulfilled. That is the only observation I want to make. As I said it earlier also, I did not say it for the sake of what you call the rhythm or anything. I am of the strong opinion that a mere Bill alone will not suffice but Bill along with political will and also administrative skill. And, if you go for a kill of the evil, then you will be able to really reach this because there are enough laws. The laws are to be implemented. That has to be kept in mind by one and all. Some of the Members were a little late, so I could not give them an opportunity. I add that the Indian Muslim League and also the Shiromani Akali Dal are also joining with the sentiments of the House and I would like to convey my thanks to all the hon. Members of the House. ...(*Interruptions*)...

SHRIMATI KANIMOZHI: Sir, through you.... ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: Please, please. ...(*Interruptions*)... Nothing shall go on record. ...(*Interruptions*)...

श्रीमती रेणुका चौधरीः *

MR. CHAIRMAN: Nothing shall go on record. ...(*Interruptions*)...

SHRI SUKHENDU SEKHAR RAY (West Bengal): Sir, I have a point of order. ...(*Interruptions*)...

MR. CHAIRMAN: The Question Hour is coming, so, there is no point of order. ...(*Interruptions*)... The Question Hour is coming. ...(*Interruptions*)... You have to understand that we have to convey a proper message today. ...(*Interruptions*)... We have to convey a proper message today. ...(*Interruptions*)... No banners. ...(*Interruptions*)... No banners. ...(*Interruptions*)... The House is adjourned to meet at 2.00 p.m.

The House then adjourned at twelve of the clock.

The House reassembled at two of the clock,
MR. DEPUTY CHAIRMAN *in the Chair.*

WRITTEN ANSWERS TO STARRED QUESTIONS

Rupashree scheme of West Bengal Government

*136. SHRI RITABRATA BANERJEE: Will the Minister of WOMEN AND CHILD DEVELOPMENT be pleased to state:

(a) whether Government is aware that the West Bengal Government has launched "Rupashree scheme" to empower adolescent girls through which they would get

* Not recorded.